नाद-नर्तन
जर्नल ऑफ डांस एण्ड म्यूजिक
ISSN: 2349-4654
वर्ष : 14, अंक : 1, जनवरी 2026

संगीत कला को संरक्षित और संवर्धन करने में वनस्थली विद्यापीठ की भूमिका

कल्पना गोयल
शोधार्थी, मंच कला विभाग
वनस्थली विद्यापीठ राजस्थान

डॉ. ऐश्वर्या भट्ट
एसोसिएट प्रोफेसर, मंच कला विभाग
वनस्थली विद्यापीठ राजस्थान

सार-संक्षेप

संगीत कला मानव जीवन की अत्यधिक प्राचीन और प्रभावशाली अभिव्यक्तियों में से एक है। यह मात्र मनोरंजन का साधन ही नहीं अपितु भावनाओं विचारों और संस्कृति का दर्पण है। आज के वैश्विक युग में संगीत कला एक सेतु के रूप में कार्य कर रही है और यह मानव सभ्यता का वह अमूल्य खजाना है जिसे सहेजना और संवर्धित करना हम सभी की जिम्मेदारी है। इसी क्रम में राजस्थान में स्थित वनस्थली विद्यापीठ एक प्रमुख महिला शिक्षण संस्थान है, जिसने शिक्षा के साथ-साथ भारतीय कला, संस्कृति और विशेष रूप से संगीत कला के संरक्षण और संवर्धन में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। इस संस्था ने न केवल संगीत की पारंपरिक विधाओं को सुरक्षित किया है, अपितु उन्हें आधुनिक शिक्षण पद्धतियों और तकनीकी साधनों के साथ जोड़कर नई पीढ़ी तक पहुँचने में अग्रणी भूमिका भी निभाई है। पारंपरिक राग, वाद्य यंत्रों और गायन शैलियों के प्रशिक्षण के साथ-साथ लोकगीत और क्षेत्रीय सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों को भी प्रोत्साहित किया है। यह संस्था अनुसंधान, प्रकाशन, संगीत संध्या, सांस्कृतिक महोत्सव और कार्यशालाओं के माध्यम से संगीत धरोहर के संरक्षण के साथ-साथ छात्राओं में रचनात्मकता, प्रस्तुति कौशल और सांस्कृतिक चेतना का भी विकास करती है। वर्तमान समय में यह संस्था भारतीय संगीत की जड़ों को सहेजते हुए उसे वैश्विक मंच पर नए स्वरूप में प्रस्तुत करने का सशक्त माध्यम बन गई है।

मुख्य शब्द – शोध, प्रकाशन, संवर्धन, सांस्कृतिक, पारंपरिक।

शोध पत्र

प्रस्तावना

भारतीय संस्कृति में संगीत का स्थान सर्वोपरि रहा है। 'नाद ब्रह्म' की अवधारणा के अनुसार संपूर्ण ब्रह्मांड में नाद व्याप्त है और यही नाद संगीत का मूल स्रोत है। संगीत केवल मनोरंजन का साधन ही नहीं अपितु यह आध्यात्मिक साधना, भावनाओं की अभिव्यक्ति और सांस्कृतिक धरोहर का सजीव उदाहरण है। वैदिक युग से लेकर आधुनिक युग तक संगीत ने समाज, संस्कृति और धर्म के निर्माण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। कभी यह भक्ति और साधना का माध्यम बना तो कभी लोकजीवन और उत्सवों की आत्मा। संगीत ने सदैव मनुष्य को सांस्कृतिक और आध्यात्मिक रूप से समृद्ध किया है। परंतु समय के साथ वैश्वीकरण और आधुनिकता के प्रभाव से भारतीय संगीत चुनौतियों का सामना कर रहा है। ऐसे परिवेश को देखते हुए वनस्थली विद्यापीठ संगीत कला के संरक्षण और संवर्धन का कार्य कर रहा है।

वनस्थली विद्यापीठ न केवल महिला शिक्षा का एक प्रमुख केंद्र है,बल्कि यह संगीत कला को नई पीढ़ी तक पहुँचाने का सशक्त माध्यम भी है। वनस्थली विद्यापीठ एक राष्ट्रीय स्तर की प्रतिष्ठित संस्था है जो की राजस्थान में टोंक जिले के पास निवाई में स्थित है। यह विशेष रूप से महिला शिक्षा को समर्पित है। यहाँ प्राथमिक शिक्षा से लेकर स्नातकोत्तर स्तर तथा अनुसंधान कार्य तक की संपूर्ण शैक्षिक व्यवस्था उपलब्ध है।

"भारत सरकार ने विश्वविद्यालय अनुदान आयोग अधिनियम की धारा 3 के अंतर्गत इसे 'विश्वविद्यालय' मान्यता प्राप्त संस्थान घोषित किया और साथ ही यह 'एसोसिएशन ऑफ इंडियन यूनिवर्सिटीज' एवं 'एसोसिएशन ऑफ कॉमनवेल्थ यूनिवर्सिटीज" (www.banastha li.

org) का भी गौरवपूर्ण सदस्य है। इस संस्था में संगीत शिक्षा के माध्यम से परंपरा और आधुनिकता का संतुलन बनाते हुए सांस्कृतिक मूल्यों को सुरक्षित रखने का प्रयास किया जाता है।

शोध समस्या

वर्तमान समय में बदलते हुए परिवेश को देखते हुए और पाश्चात्य प्रभाव के कारण परंपरागत चलने वाले शास्त्रीय संगीत का संरक्षण एक चुनौती बन गया है। यदि देखा जाए तो आज के युवाओं में संगीत के प्रति रुचि तो है परंतु परंपरागत शास्त्रीय संगीत के प्रति आकर्षण धीरे-धीरे कम होता जा रहा है। ऐसे में यह बहुत महत्त्वपूर्ण हो जाता है कि परंपरा और आधुनिकता के मध्य संतुलन कैसे स्थापित किया जाए और संगीत जैसी प्राचीन विद्या को मौलिकता के साथ सुरक्षित रखते हुए समकालीन संदर्भ में कैसे प्रस्तुत किया जाए? ऐसी स्थिति में शैक्षणिक संस्थान विशेषकर वनस्थली विद्यापीठ क्या इस दिशा में अपना कोई योगदान दे रहा है?

इस प्रकार इस शोध का मुख्य बिंदु यही है कि संगीत कला के संरक्षण और संवर्धन में यह संस्थान किस प्रकार अपनी भूमिका निभा रहा है और राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर इस संस्थान के योगदान का क्या महत्त्व है।

शोध अध्ययन का उद्देश्य

प्रस्तुत शोध पत्र का मुख्य उद्देश्य वनस्थली विद्यापीठ की संगीत शिक्षा परंपरा एवं इस संस्था की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का अध्ययन करना है। हमारे भारत देश में संगीत की परंपरा अति प्राचीन रही है, परंतु आज के वैश्विक युग में भारतीय संगीत चुनौतियों का सामना कर रहा है। इस स्थिति में संगीत कला के संवर्धन हेतु संस्था द्वारा किए जा रहे प्रयासों को उजागर करना इस शोध पत्र का मुख्य उद्देश्य है। संगीत कला के क्षेत्र में वनस्थली विद्यापीठ के राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय योगदानों को रेखांकित करना भी प्रमुख उद्देश्यों में से एक है। संगीत कला के संरक्षण और संवर्धन में पंचमुखी शिक्षा का महत्त्व बताना एवं छात्राओं के व्यक्तित्व विकास में संगीत शिक्षा के योगदान को सिद्ध करना भी इस शोध पत्र का मुख्य उद्देश्य है।

शोध पत्र की परिकल्पना

प्रस्तुत शोध पत्र की आधारभूत परिकल्पना यह है कि संगीत कला के संरक्षण और संवर्धन में वनस्थली विद्यापीठ एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। यह संस्थान परंपरा और आधुनिकता का समन्वय बनाते हुए सांस्कृतिक धरोहर को सुरक्षित रखने में सक्षम है और साथ ही राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी यह संगीत की गरिमा को सुदृढ़ करने में विशेष भूमिका निभा रहा है। वनस्थली विद्यापीठ की शैक्षिक, सांस्कृतिक एवं सह पाठ्यक्रम गतिविधियां संगीत के संरक्षण एवं संवर्धन हेतु एक सशक्त नींव स्थापित करती हैं।

शोध की प्रासंगिकता

प्रत्येक समाज की आत्मा उसकी संस्कृति में विद्यमान होती है। संगीत, भारतीय संस्कृति की आत्मा और परंपराओं का दर्पण होता है। इसे सुरक्षित करना सांस्कृतिक धरोहर की रक्षा करना है।यह शोध अध्ययन बताता है कि एक शैक्षणिक संस्थान राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर संगीत की परंपरा को जीवित रखकर सांस्कृतिक एकता और पहचान को सशक्त बनाता है। वनस्थली विद्यापीठ विभिन्न सामूहिक कार्यक्रमों के माध्यम से समाज में सहयोग, सामंजस्य और एकता की भावना को प्रोत्साहित करती है एवं छात्राओं को संगीत की शिक्षा प्रदान कर उन्हें अनुशासन और नैतिक मूल्यों का अनुसरण करना भी सिखाती है।

इस शोध से यह स्पष्ट होगा कि यह संस्था किस प्रकार नई पीढ़ी को संगीत जैसी धरोहर से जोड़ते हुए उसे निरंतर समृद्ध कर रही है।

कार्य प्रणाली

किसी भी शोध की प्रामाणिकता उसकी कार्य प्रणाली पर आधारित होती है। यह अध्ययन वर्णनात्मक शोध पद्धति पर आधारित है। प्रस्तुत शोध विषय की कार्य प्रणाली में प्राथमिक एवं द्वितीयक स्रोत द्वारा जानकारी ली गई है।

अध्ययन हेतु 37 व्यक्तियों को नमूना जनसंख्या के रूप में चयनित किया गया।

- डेटा संग्रह के लिए प्रश्नावली एवं साक्षात्कार विधि का प्रयोग किया गया।
- संगीत की कक्षाओं एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों का प्रत्यक्ष अवलोकन किया गया है।

पुस्तकें, शोध पत्र, पत्रिकाएँ एवं इंटरनेट का उपयोग किया गया है।

वनस्थली विद्यापीठ का ऐतिहासिक परिचय

ऐतिहासिक समय से लेकर अभी तक वनस्थली विद्यापीठ का स्थान गौरवपूर्ण एवं वैभवशाली रहा है। यह संस्था राजस्थान की एकमात्र संस्था है जो की महिलाओं की शिक्षा एवं व्यक्तित्व के निर्माण के लिए संपूर्ण विश्व में विख्यात है। वनस्थली विद्यापीठ के संस्थापक स्व. पंडित हीरालाल शास्त्री जी ने सन् 1929 में भूतपूर्व जयपुर राज्य सरकार में गृह तथा विदेश विभाग के सचिव के सम्मानपूर्ण पद को त्याग कर बन्थली (वनस्थली) जैसे सुदूर गाँव को अपने भावी कार्य क्षेत्र के रूप में चुना और उनके इस कार्य में उनकी धर्मपत्नी स्व. श्रीमती रतन शास्त्री जी ने भी अपना योगदान दिया। पंडित हीरालाल शास्त्री एवं श्रीमती रतन शास्त्री जी की पुत्री शांताबाई जो असाधारण प्रतिभा की धनी थी। मात्र 12 वर्ष की अल्पायु में केवल एक दिन की अस्वस्थता के पश्चात पंचतत्व में विलीन हो गई। शांताबाई से उन्हें समाज सेवा की बड़ी उम्मीद थी किंतु शिक्षा के प्रति गहरी रुचि और समाज की बेटियों को आगे बढ़ने का सपना ही 'वनस्थली विद्यापीठ' की प्रेरणा बना।

"पंडित हीरालाल शास्त्री जी ने अपने परिचित मित्रों की 5–6 बच्चियों को बुलाकर उनके शिक्षण का कार्य आरंभ कर दिया और इसके लिए 6 अक्टूबर 1935 को अपनी पुत्री की स्मृति में श्री शांताबाई जीवन कुटीर की स्थापना की, (शास्त्री 357) जो कि बाद में वनस्थली विद्यापीठ के रूप में विकसित हुई।

वर्तमान समय में यह एशिया का सबसे बड़ा महिला आवासीय शिक्षण संस्थान है, जहाँ शिक्षा की व्यवस्था प्राथमिक स्तर से लेकर डॉक्टरेट (PH.D) तक दी जाती है। यहाँ शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञानअर्जन तक सीमित नहीं है अपितु छात्राओं को सांस्कृतिक, नैतिक, सामाजिक और वैज्ञानिक दृष्टि से परिपूर्ण बनाना है। इस प्रकार वनस्थली विद्यापीठ भारतीय संस्कृति और आधुनिक शिक्षा का अद्भुत संगम प्रस्तुत करता है।

संगीत विभाग की विकास यात्रा

हमारे देश की भव्य संस्कृति में संगीत का विशेष महत्त्व है, संगीत के बिना कोई समाज उन्नति नहीं कर सकता। सृष्टि के आरंभ से ही संगीत मानव समाज से अति निकटतम रहा है। संगीत ने प्रत्येक युग और प्रत्येक समाज की सांस्कृतिक धारा को एक नई दिशा प्रदान की है। यह लोकगीतों के रूप में गाँवों की मिट्टी की खुशबू है, शास्त्रीय संगीत के रूप में साधना और अनुशासन की पराकाष्ठा है और आधुनिक संगीत के रूप में नूतन पीढ़ी की अभिव्यक्ति है। इस प्रकार संगीत ने सदैव समाज को उसकी भावनाओं, आकांक्षाओं और संस्कारों से जोड़कर रखा है। भारतीय संस्कृति में कला को सदैव जीवन का प्राण माना गया है क्योंकि कला केवल सौंदर्यबोध का साधन ही नहीं अपितु वह मानव की संवेदनाओं और विचारों की अभिव्यक्ति का माध्यम भी है। प्राचीन भारतीय परंपरा के अनुसार कला को 'ललित कला' की संज्ञा दी गई है जिनमें चित्रकला, मूर्तिकला, काव्यकला, वास्तुकला और संगीतकला आदि प्रमुख मानी जाती हैं और इन समस्त ललित कलाओं में भी संगीत को सर्वश्रेष्ठ माना गया है क्योंकि यह प्रत्यक्ष रूप से मनुष्य के हृदय और आत्मा को स्पर्श करता है।

वनस्थली विद्यापीठ के संस्थापक पं. हीरालाल शास्त्री लौह पुरुष होने के साथ-साथ संगीत प्रेमी भी थे। सन् 1943 में वनस्थली विद्यापीठ में संगीत कला का अभ्युदय आरंभ हुआ। शास्त्री जी ने संगीत कला के साथ-साथ अन्य ललित कलाओं को भी स्थापित किया। इसी दौरान गायन पक्ष के सर्वश्रेष्ठ कलाकार "श्री दिगंबर जनार्दन फड़के जी' जिन्हें शास्त्रीय संगीत में महारत हासिल थी, उन्हें शास्त्री जी द्वारा इस संस्थान में अपनी सेवा देने का अवसर प्राप्त हुआ, उन्होंने यहाँ पढ़ने वाली छात्राओं को अपने संगीत से अवगत कराया। इस संस्थान में जनार्दन जी का नियुक्त होना मात्र नौकरी नहीं था, उनका उद्देश्य था की छात्राएँ संगीत कला के क्षेत्र में वनस्थली विद्यापीठ का नाम रोशन करें।" (उपाध्याय 58)

"सन् 1943 में स्थापित हुआ यह विभाग वनस्थली विद्यापीठ के प्राचीनतम विभागों में से एक है और इसको विकसित करने में अनेकों प्रसिद्ध कलाकारों का योगदान रहा है। जिनमें सन् 1946 में 'पं.लक्ष्मण भट्ट तैलंग', सन् 1958 में 'प्रो.रमेशचंद्र शंकर नाटकरनी जी' और सन् 1967 में पं.विनायक राव पटवर्धन', 'राजा भैया पूँछवाले' एवं 'नारायण व्यास जी' का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। संगीत विभाग में सर्वप्रथम गायन में बी.ए, एम.ए पाठ्यक्रम की शुरुआत प्रख्यात संगीताचार्य 'प्रो. बी.आर. देवधर' द्वारा की गई। इसके पश्चात 'डॉ.आर.डी.वर्मा जी' के द्वारा वादन में सितार की शिक्षा छात्राओं को देना आरंभ किया। 'श्री रतनलाल जैन' तथा राजस्थान के सुप्रसिद्ध तबला वादक 'श्री घिसीलाल डांगी जी' ने छात्राओं को तबले का शिक्षण देना आरंभ किया। यहाँ संगीत विभाग की स्थापना प्रो.बी.आर. देवधर जी के प्रयासों से हुई तत्पश्चात 'पी.एन. चिंचोरे' एवं 'विनायक राव पटवर्धन' आदि विद्वानों ने विभाग अध्यक्ष के रूप में कार्य कर विभाग को उन्नति की ओर अग्रसर किया।" (उपाध्याय 61)

इसी क्रम में यहाँ का नृत्य एवं नाट्य विभाग भी विगत वर्षों से सक्रिय है, जो नृत्य के माध्यम से छात्राओं की शारीरिक क्षमता, मानसिक एकाग्रता तथा सृजनात्मक अभिव्यक्ति को विकसित करने के लिए सतत समर्पित रहा है। वर्तमान समय में प्रो. ईना आदित्य शास्त्री यहाँ विभागाध्यक्ष के पद पर कार्यरत हैं और हम सभी का मार्गदर्शन कर रही हैं। "जिस समय विभाग की स्थापना हुई थी तब संगीत सिखने वाली छात्राएँ 5–6 ही हुआ करती थी, परंतु समय के साथ-साथ छात्राओं की संगीत में रुचि बढ़ते देख संगीत विभाग को नए ढांचे और नई तकनीकी के साथ बदला गया, जिसका शिलान्यास 2010 में किया गया और आज इस संगीत विभाग को 'सुर मंदिर' के नाम से जाना जाता है।" (उपाध्याय 65)

प्रतियोगिताओं और कार्यक्रमों द्वारा संगीत संवर्धन

भारतीय संगीत का इतिहास प्रत्येक युग में ही प्रभुत्वशाली रहा है परंतु आधुनिक युग को संगीत के इतिहास में नवजागरण एवं क्रांतिकारी युग के रूप में देखा जाता है, क्योंकि इस शताब्दी में गायन–वादन शैली, मंचकला प्रदर्शन, प्रचार-प्रसार, प्रकाशन, नवीन सृजन जैसी सभी दिशाओं में भारतीय संगीत ने नए युग का आरंभ किया है।

चित्र संख्या- 1.संगीत विभाग की छात्राओं द्वारा बसंत पंचमी महोत्सव पर सांगीतिक प्रस्तुति

चित्र संख्या- 2. बसंत पंचमी महोत्सव

इस युग में वनस्थली विद्यापीठ ने न केवल शास्त्रीय संगीत को ग्रहण किया अपितु उसका संरक्षण और संवर्धन करके स्वयं को निरंतर समृद्ध भी बनाया।

विभिन्नताओं के मध्य एकता की अखंडता को बनाए रखने में कला और संस्कृति का अत्यंत महत्त्वपूर्ण योगदान है। जहाँ संस्कृति जीवन के मूल्य और परंपराओं को संजोती है, वहीं दूसरी ओर कला उन्हें अभिव्यक्त करके जनमानस तक पहुँचाती है। संस्कृति और कला को एक मंच पर लाने का श्रेय प्रतियोगिता और युवा समारोह आयोजित कराने वाली संस्थाओं, विद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों को ही जाता है। प्रतियोगिताओं के द्वारा विद्यार्थियों को नए प्रयोग करने और रचनात्मकता दिखाने का अवसर प्राप्त होता है जिससे संगीत के नए आयाम और शैलियों का भी सृजन होता है। इसी दिशा में सन् 1986 में वनस्थली विद्यापीठ ने युवा महोत्सव प्रतियोगिता में अपना परचम लहराया। यहाँ की छात्राओं ने सभी स्तर की प्रतियोगिताओं में स्वयं की काबिलियत को प्रदर्शित करके इस संस्था का नाम रोशन किया। उनके लिए विजयपथ का यह सफर आसान नहीं रहा, परंतु यह उनके गुरुओं द्वारा मिले ज्ञान, प्रेरणा और महीनों से घंटों-घंटों रियाज कराने का परिणाम है कि वह प्रतियोगिताओं में खुद को सर्वश्रेष्ठ सिद्ध कर पायीं हैं। यह संस्था विशेष रूप से अपनी संस्कृति के लिए लोकप्रिय है। यहाँ सभी उत्सवों एवं त्योहारों को बड़े हर्षौल्लास के साथ मनाया जाता है, जिसमें संगीत अपनी अहम् भूमिका निभाता है। जन्माष्टमी, गणेश चतुर्थी, दुर्गा पूजा, बसंत पंचमी, होली आदि उत्सवों पर संगीत विभाग की छात्राओं द्वारा प्रस्तुतियां दी जाती हैं। इससे संगीत की छात्राओं को तो प्रोत्साहन मिलता ही है साथ ही अन्य छात्राओं में भी संगीत के प्रति सकारात्मक भावना उत्पन्न होती है।

संगीत के संवर्धन हेतु शिक्षकों एवं छात्राओं द्वारा संगीत समिति की पहल हुई, जिसमें छात्राओं द्वारा संगीत की तीनों विधाएं गायन, वादन और नृत्य की प्रस्तुतियां दी जाती हैं। इसको बनाने का मुख्य उद्देश्य यही था कि छात्राओं में आत्मविश्वास बढ़े, कुछ नई प्रतिभाएं सामने आएं और उन्हें सही मार्गदर्शन और पहचान मिले और साथ ही संगीत को संवर्धित भी कर सके। "भारतीय शास्त्रीय संगीत और संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए विभाग में स्पिक मैके (SPIC MACAY) के कार्यक्रम भी आयोजित होते हैं, जिसमें प्रतिष्ठित कलाकारों के द्वारा छात्राओं को संगीत की विधाओं के विषय में ज्ञान अर्जन का अवसर प्राप्त होता है और सांस्कृतिक विरासत के अमूर्त पहलुओं को बढ़ावा मिलता है।" (अंकित भट्ट) अतः इस प्रकार विभाग में अनेकों कार्यक्रमों के द्वारा समय-समय पर संगीत कला का संरक्षण और संवर्धन किया जाता है तथा छात्राओं में कार्यक्रमों के माध्यम से अपनी संस्कृति और परंपराओं के प्रति गर्व की भावना को भी जागृत किया जाता है।

संगीत के संरक्षण में पंचमुखी शिक्षा का महत्त्व

वनस्थली विद्यापीठ संपूर्ण विश्व की एकमात्र ऐसी महिला शिक्षण संस्था है जहाँ पंचमुखी शिक्षा का शिक्षण छात्राओं को दिया जाता है। "शिक्षा का उद्देश्य केवल बौद्धिक विकास तक सीमित नहीं होना चाहिए अपितु वह व्यक्तित्व के प्रत्येक आयाम को परिपूर्ण बनाने का भी एक माध्यम होना चाहिए" (शास्त्री 269) और इसी व्यापक दृष्टिकोण के आधार पर वनस्थली विद्यापीठ की स्थापना हुई जहाँ की शैक्षिक व्यवस्था पारंपरिक गुरुकुल पद्धति और आधुनिक आवश्यकताओं का समन्वय प्रस्तुत करती है एवं छात्राओं को शारीरिक, बौद्धिक, सौंदर्यात्मक, व्यावहारिक तथा नैतिक, आध्यात्मिक दृष्टि से संतुलित और सक्षम बनाती है।

पंचमुखी शिक्षा के पांच आयाम है जो इस प्रकार हैं –

1. **शारीरिक शिक्षा –** इसके अंतर्गत छात्राओं को स्वास्थ्य, व्यायाम, खेलकूद और शारीरिक गतिविधियों के माध्यम से शारीरिक रूप से सशक्त और स्वस्थ बनाने पर जोर दिया जाता है।
2. **बौद्धिक शिक्षा –** इस शिक्षा के अंतर्गत नियमित पाठ्यक्रम वाद-विवाद, संगोष्ठी एवं विभिन्न बौद्धिक गतिविधियों के माध्यम से बौद्धिक क्षमता का विकास किया जाता है।
3. **व्यवहारिक शिक्षा** – यह शिक्षा का वह आयाम है जिसके माध्यम से छात्राएँ अपने व्यक्तित्व तथा व्यावसायिक जीवन में आने वाली समस्याओं के समाधान हेतु अपने कौशल, क्षमताओं और ज्ञान का विकास करती हैं। इसमें छात्राओं को हस्तकला, कंप्यूटर, तकनीकी कौशल और स्वावलंबन के लिए आवश्यक प्रशिक्षण दिया जाता है।
4. **नैतिक शिक्षा** – इसमें छात्राओं को अनुशासन, सेवा भाव, सत्य, अहिंसा, देशभक्ति, नेतृत्व और आध्यात्मिक रूप से सशक्त बनाया जाता है।
5. **कला विषयक शिक्षा** – इस शिक्षा के अंतर्गत संगीत, चित्रकला, नाट्य और सांस्कृतिक गतिविधियों के माध्यम से सृजनात्मक एवं कलात्मक विकास किया जाता है। संगीत के संरक्षण एवं संवर्धन में यह शिक्षा विशेष महत्त्व रखती है। इस संस्था में कलात्मक शिक्षा का कार्यक्रम दो रूपों में संचालित होता है– एक नियमित पाठ्यक्रम के रूप में और दूसरा सह पाठयक्रम गतिविधि के

रूप में। यहाँ संगीत के अंतर्गत तीनों विधाएं गायन, वादन और नृत्य तीनों की शिक्षा दी जाती है। गायन के अंतर्गत छात्राओं को शास्त्रीय संगीत, लोक संगीत एवं पाश्चात्य संगीत की शिक्षा दी जाती है तथा वादन के अंतर्गत मुख्यतः शास्त्रीय वाद्य जैसे- तबला, सितार, सरोद, वायलिन, शास्त्रीय गिटार आदि का ज्ञान कराया जाता है और उन्हीं की शिक्षा दी जाती है एवं नृत्य के अंतर्गत कत्थक, भरतनाट्यम, मणिपुरी एवं राजस्थानी लोकनृत्य का प्रशिक्षण दिया जाता है। यहाँ की मुख्य विशेषता यही है कि यहाँ अन्य विषय का अध्ययन करने वाली छात्राएँ भी पंचमुखी शिक्षा के इस आयाम के द्वारा संगीत की शिक्षा उत्साहपूर्वक ग्रहण करती हैं, जिसके लिए तीनों विधाओं में सर्टिफिकेट कोर्से कराए जाते हैं जैसे–प्रथमा, मध्यमा, विशारद, प्रभाकर इत्यादि। इससे छात्राओं को न केवल प्रोत्साहन मिलता है अपितु उनमें संगीत के प्रति रुचि भी बढ़ती है।

चित्र संख्या - 3

वायलिन (प्रथमा) की कक्षा का चित्र

चित्र संख्या - 4

तबला (प्रथमा) की कक्षा का चित्र

चित्र संख्या - 5

सितार की कक्षा का चित्र

चित्र संख्या - 6

शास्त्रीय गिटार की कक्षा का चित्र

संगीत विभाग के शिक्षकों से साक्षात्कार के माध्यम से प्राप्त जानकारी

According to Pt. Debajit Chakrabarty's Statement: "Banastha li Vidyapith is doing laudab le job in preserving Indian C lassica l Music as we ll as fo lk music.The department of music of Banastha li has rich and o ld tradition which has produced number of good students who have occupied a prominent position in different institutions. The department has been gifted with many renowned musicians as facu lty". (देबोजीत चक्रवर्ती)

तबला वादक पंडित रामस्वरूप जी के कथन अनुसार– "मैं यहाँ 45 वर्ष से कार्यरत हूँ अभी से लगभग 40-45 वर्ष पूर्व यहाँ मात्र चार ही तबला वादक नियुक्त थे। परंतु निरंतर विद्यापीठ के विकास यात्रा के

अंतर्गत वर्तमान समय में यहाँ संगीत विभाग में लगभग 14 तबला वादक कार्यरत है। जिस समय वनस्थली की स्थापना हुई उसे समय यहाँ केवल गायन और सितार की शिक्षा दी जाती थी परंतु समय के साथ-साथ वायलिन की भी कक्षाएं आरंभ हो गई। इस प्रकार वनस्थली ने संगीत के संवर्धन में अपनी भूमिका निभाई, लेकिन यहाँ तबला विषय में डिग्री की सुविधा उपलब्ध नहीं है फिर भी इसके संरक्षण हेतु विभाग द्वारा तबले में सर्टिफिकेट कोर्स की सुविधा उपलब्ध कराई गई है। तबला वादक के रूप में मेरा यही सुझाव है कि तबले को भी डिग्री और एम.ए कोर्स में शामिल करना चाहिए जिससे इस विषय को भी अधिक महत्त्व प्राप्त हो सके, क्योंकि संगीत में मेलोडी और ताल एक दूसरे के पूरक हैं।" (रामस्वरूप)

According to Dr.Neha Joshi's Statement: "I have been associated with so many universities in Rajasthan and I know for sure personally that nobody is working as hard as Banasthali is doing in music. Banasthali is the only University which have around 65 people in only music department and there is no management interference in our classes. Everyone teaches in their own way. Banasthali Vidyapeeth is performing world over and this is the result of the collaborative effort between the management and the staff, ofcourse the students are also working hard. So, when you have such qualified performers in your department, the credit goes to the HOD who recruites such people with specialization in so many fields". (डॉ.नेहा जोशी)

जैसा कि संगोष्ठी में डॉ.मनोज मिश्रा जी के द्वारा मुझसे प्रश्न किया गया था कि "वनस्थली विद्यापीठ में तबला विषय में डिग्री की सुविधा उपलब्ध नहीं है इसका क्या कारण है? मैंने इस प्रश्न के उत्तर के लिए विभाग के तबला वादक पं.रामस्वरूप जी से जानकारी प्राप्त की जिसको मेरे द्वारा लिए गए साक्षात्कार में भी दर्शाया गया है।

शोधार्थी के दृष्टिकोण से देखा जाए तो तबले को मुख्य विषय के रूप में शामिल नहीं करने का यही कारण है कि अधिकांश छात्राओं की रुचि गायन, सितार एवं वायलिन में है। इसको देखते हुए तबले को मुख्य विषय में शामिल न करके उसमें सर्टिफिकेट कोर्स की सुविधा उपलब्ध कराई गई है, जिससे यह लाभ हुआ कि संगीत की अन्य विधाओं की छात्राओं के साथ-साथ अन्य विषय एवं विभाग की छात्राएं भी इसका लाभ उठा रही हैं।

जिस प्रकार पूर्वांतर में भी यहाँ वायलिन मुख्य विषय में शामिल नहीं था, परंतु छात्राओं की बढ़ती रुचि को देखते हुए समयनुसार वायलिन को मुख्य विषय के रूप में सम्मिलित किया गया, इसी प्रकार भविष्य में यह संभावना है कि तबले को भी मुख्य विषय के रूप में शामिल किया जा सकता है।

तथ्य एवं सर्वेक्षण

प्रस्तुत अध्ययन में विषय से संबंधित किए गए सर्वेक्षण से प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषण किया गया है। इस सर्वेक्षण में शोधार्थी द्वारा 37 व्यक्तियों से ऑनलाइन गूगल फॉर्म के माध्यम से प्रश्नावली भरवाई गई हैं। जिसमें संगीत के अन्य विश्वविद्यालयों के शिक्षाविद्, विद्यार्थी तथा शोधार्थी सम्मिलित हैं। प्रश्नावली के आधार पर संकलित तथ्य और उनकी समीक्षा का रूप प्रस्तुत है–

प्रश्न 1– आप वर्तमान में किस शैक्षणिक स्तर से संबंधित है?

(8.1%) स्नातक

(36.1%) स्नातकोत्तर

(36.1%) शोधार्थी

(16.9%) शिक्षक/ प्राध्यापक

(2.8%) अन्य

प्रश्न 2– क्या आपने वनस्थली विद्यापीठ के कार्यक्रम देखे हैं?

(97.2%) हाँ

(2.8%) नहीं

प्रश्न 3– यदि हाँ, तो आपने किस माध्यम से संगीत कार्यक्रमों को सुना/ देखा है?

(26.2%) प्रत्यक्ष रूप से

(11.1%) विश्वविद्यालय की वेबसाइट से

(40.5%) सोशल मीडिया

(22.2%) यू ट्यूब चैनल

प्रश्न 4– क्या वनस्थली विद्यापीठ के कार्यक्रम उच्च कलात्मक स्तर के होते हैं?

(100%) हाँ

(0%) नहीं

प्रश्न 5– क्या यहाँ के कार्यक्रमों में शास्त्रीय एवं लोक संगीत की प्रस्तुति परंपरागत रूप से की जाती है?

(100%) हाँ

(0%) नहीं

प्रश्न 6– क्या आपको लगता है कि ऐसे कार्यक्रम युवा पीढ़ी में संगीत के प्रति रुचि बढ़ाते हैं?

(98.2%) हाँ

(1.8%) नहीं

प्रश्न 7– इस विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित संगोष्ठियां,कार्यशालाएं एवं प्रतियोगिताएं संगीत संवर्धन में उपयोगी है?

(100%) हाँ

(0%) नहीं

प्रश्न 8– आपके अनुसार वनस्थली विद्यापीठ में संगीत शिक्षा व्यवस्थित है या नहीं?

(100%) सहमत

(0%) असहमत

प्रश्न 9– क्या वनस्थली विद्यापीठ छात्राओं को मंचीय प्रस्तुति के लिए अवसर प्रदान करता है?

(97.3%) सहमत

(2.7%) असहमत

प्रश्न 10– क्या वनस्थली विद्यापीठ राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भारतीय संगीत को प्रचलित एवं संवर्धित कर रहा है?

(94.6%) सहमत

(5.4%) असहमत

परिणाम

इस सर्वेक्षण में यह पाया गया कि अधिकांश उत्तरदाताओं ने वनस्थली विद्यापीठ के कार्यक्रम देखे हैं चाहे वह प्रत्यक्ष रूप से देखें हो या सोशल मीडिया के माध्यम से और यहाँ के कार्यक्रम उच्च कलात्मक स्तर के होते हैं सभी ने इसकी भी पूर्णतः पुष्टि की। 94.6% उत्तरदाताओं ने यह स्वीकार किया है कि वनस्थली विद्यापीठ राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भारतीय संगीत को प्रचलित और संवर्धित कर रहा है।

कृतज्ञता

प्रस्तुत शोध विषय के स्पष्टीकरण के लिए मैं प्रो.सुनीता गंगराड़े, डॉ. किरन चौहान, डॉ.अदिति कौशिक, शिवांगी सक्सेना, विशाल लौट, उज्ज्वला शर्मा, राहुल, वंशिका सिंघल, सुश्री, मोनिका भट्ट, अनुष्का शाह, शुभांजलि चौरसिया, वेदांतिका पालीवाल, प्रियंका दुबे, रियांशी वर्मा, उर्वी बरनवाल, आशी, उर्वी, नैन्सी वर्मा, शुभांकर शर्मा (25-1-26)। मोहित भादुड़ी, रश्मि शर्मा, रनवेंद्र प्रताप सिंह, डैनिश शर्मा, अभिजीत ढाबे, जाह्नवी वर्मा, आरती पंत (26-1-26)। डॉ.ज्योति सारस्वत, डॉ.विनायक शर्मा, डॉ.ज्योति, पवन कुमार शर्मा, अमीषा, नंदिनी सैनी, निधि आनंद, शिवा, नीरप्रभा एवं करन बरेठ (27-1-26) का मैं हृदय से आभार व्यक्त करती हूँ, जिन्होंने समय पर प्रश्नावली के उत्तर देकर मेरी शोध को पूर्ण करने में मेरी सहायता की।

निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध पत्र का यही निष्कर्ष निकलता है कि वनस्थली विद्यापीठ संगीत कला के संरक्षण एवं संवर्धन में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। यह संस्थान न केवल भारतीय शास्त्रीय और लोक संगीत की परंपराओं को सुरक्षित रखता है अपितु आधुनिक युग की आवश्यकताओं के अनुसार नए प्रयोग और नवाचार को भी प्रोत्साहित करता है। यहाँ पंचमुखी शिक्षा प्रणाली के तहत संगीत को विशेष स्थान देकर छात्राओं में कलात्मक, रचनात्मक और सांस्कृतिक चेतना का विकास किया जाता है। वनस्थली विद्यापीठ ने विभिन्न संगीत कार्यक्रम, युवा महोत्सव, प्रतियोगिताओं के माध्यम से संगीत को राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर तक पहुँचाया है। अतः यह कहा जा सकता है कि यह संस्थान संगीत का संरक्षण, संवर्धन और प्रचार– प्रसार का जीवंत केंद्र बनकर नई पीढ़ी को सांस्कृतिक विरासत से जोड़ते हुए परंपरा और आधुनिकता का समन्वय प्रस्तुत कर रहा है।

शोधार्थी का यह सुझाव है कि तबला एवं अन्य वादन विषयों में भी विद्यापीठ द्वारा पृथक डिग्री कार्यक्रम प्रारंभ किए जाने चाहिए, जिससे विद्यार्थियों को विशेषीकृत प्रशिक्षण प्राप्त हो सके।

चित्र संख्या - 7

चित्र संख्या - 8

चित्र संख्या - 9

राजस्थान की लोक धरोहर को विश्व पटल पर प्रतिष्ठित करता वनस्थली विद्यापीठ

सन्दर्भ सूची

1. https://www.banasthali.org Accessed on 13 September 2025.
2. शास्त्री, रतन, अपनी कहानी अपनी जबानी, अनुपम प्रकाशन, जयपुर, प्रथम संस्करण-1974
3. उपाध्याय, स्वर्णिमा, वनस्थली विद्यापीठ की संगीत परंपरा : एक अध्ययन, वनस्थली विद्यापीठ, 2024
4. उपाध्याय, स्वर्णिमा, वनस्थली विद्यापीठ की संगीत परंपरा : एक अध्ययन, वनस्थली विद्यापीठ, 2024
5. उपाध्याय, स्वर्णिमा, वनस्थली विद्यापीठ की संगीत परंपरा : एक अध्ययन, वनस्थली विद्यापीठ, 2024
6. साक्षात्कार : अंकित भट्ट (संगीत शिक्षक एवं सितार वादक), साक्षात्कर्ताः कल्पना गोयल, वनस्थली विद्यापीठ, राजस्थान, तिथि 10-09-2025
7. शास्त्री, हीरालाल, प्रत्यक्षजीवनशास्त्र. अनुपम प्रकाशन, जयपुर, प्रथम संस्करण-1974
8. साक्षात्कार : पं.देबोजीत चक्रवती (संगीत शिक्षक एवं टॉप ग्रेड सितार कलाकार), साक्षात्कर्ता : कल्पना गोयल, वनस्थली विद्यापीठ, राजस्थान, तिथि 21-11-2025
9. साक्षात्कार : पं.रामस्वरूप (कुशल तबला वादक), साक्षात्कर्ता : कल्पना गोयल, वनस्थली विद्यापीठ, राजस्थान, तिथि 26-09-2025
10. साक्षात्कार : डॉ.नेहा जोशी (संगीत शिक्षिका एवं गायिका) साक्षात्कर्ता : कल्पना गोयल, वनस्थली विद्यापीठ, राजस्थान, तिथि 22-11-2025